Course — M. Education part 1
Paper — V (Psychological foundation of Education)
Topic — Personality (Part II)
Prepared by — Dr. Sangeeta Kumari

इकाई : 8 व्यक्तित्व
Unit : 8 PERSONALITY.

8.1 व्यक्तित्व के निर्धारक (Determinants of Personality:-

व्यक्तित्व के निर्धारक तत्व तीन हैं —

(1) जैविक निर्धारक (Biological Determinants)
(2) सामाजिक एवं सांस्कृतिक निर्धारक (social & cultural determinants)

8.1.1 जैविक निर्धारक

जैविक निर्धारकों का तात्पर्य उन कारकों से है जो आनुवंशिक होते हैं। ये निर्धारक निम्नलिखित हैं —

(1) शारीरिक संरचना (Physique):-

शारीरिक संरचना का अर्थ शारीरिक गठन, लम्बाई, ऊँचा, आकर्षण आदि है। ये सभी शारीरिक शीलगुण वंशागत होते हैं।

(2) बुद्धि (Intelligence)

बुद्धि एक जैविक कारक है, जिसका प्रभाव व्यक्तित्व विकास पर अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है।

(3) तंत्रिका तंत्र (Nervous system)

यह निर्धारक वंशागत होता है। तंत्रिका तंत्र जितना अधिक जटिल होगा, व्यक्ति में बौद्धिक योग्यता एवं अभियोजन-योग्यता उतना ही अधिक होती है।

(4) अंतःस्रावी ग्रंथियाँ (Endocrine glands)

अंतःस्रावी ग्रन्थियों का प्रभाव न केवल हमारे सभी शारीरिक कार्यों पर पड़ता है बल्कि हमारे संवेग तथा चिन्तन पर भी पड़ता है। इनका प्रभाव बुद्धि तथा व्यक्तित्व के विकास पर भी पड़ता है और बुद्धि ग्रन्थियों में अन्तःसम्बन्ध पाया जाता है और ...

Scanned with CamScanner

एक दूसरे के प्रभाव से प्रभावित होती है। वास्तव में वे एक टीम की तरह कार्य करते हैं। इन ग्रन्थियों का प्रभाव जन्म से पहले तथा बाद में शारीरिक तथा मानसिक विकास पर पड़ता है। सभी ग्रन्थियाँ एक ही साथ विकसित नहीं होती हैं। Gonads का विकास परिपक्व अवस्था में होता है। अन्तःस्रावी ग्रन्थि के अन्तर्गत थाइरॉयड ग्रन्थि, पाराथायरॉइड, एड्रीनल ग्रन्थि, यौन ग्रन्थि पीयूष ग्रन्थि तथा अग्नाशय आते हैं। ये सभी ग्रन्थि एक टीम की तरह कार्य करते हैं।

2) व्यक्तित्व के सामाजिक एवं सांस्कृतिक निर्धारक
Social and Cultural Determinants of Personality

व्यक्तित्व के विकास एवं निर्माण पर जैविक कारकों (factors) के साथ ऐसे कारकों का भी प्रभाव पड़ता है, जिनका सम्बन्ध वातावरण, सामाजिक परिस्थिति तथा संस्कृति से होता है। इसके निम्नलिखित निर्धारक मुख्य हैं—

(1) समूह का प्रभाव

व्यक्तित्व के विकास पर तीन प्रकार के समूह का प्रभाव पड़ता है— प्राथमिक समूह, द्वितीयक समूह तथा संदर्भ समूह

(1) प्राथमिक समूह

परिवार एक प्राथमिक समूह है। इसका प्रभाव व्यक्तित्व विकास पर सबसे अधिक पड़ता है। बच्चों का पालन-पोषण तथा उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना परिवार का दायित्व होता है।

पारिवारिक उत्साह (Family warmth):-

बच्चों के व्यक्तित्व के निर्माण पर पारिवारिक स्नेह या तिरस्कार का गहरा प्रभाव पड़ता है। विशेष रूप से माता-पिता के अति स्नेह तथा अति तिरस्कार का बुरा प्रभाव उनके व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है। संतुलित माता में स्नेह मिलने पर बच्चों में आगे चलकर संवेगात्मक स्थिरता संभव होती है।

पारिवारिक शिक्षण

परिवार बच्चे के जीवन की पहली पाठशाला है और माता-पिता प्रथम शिक्षक हैं। वे अपने बच्चों को कुछ व्यवहारों के लिए प्रोत्साहित करते हैं तथा दण्ड देते हैं, और कुछ व्यवहारों के लिए हतोत्साहित करते हैं तथा दंड देते हैं। इससे बच्चों के व्यक्तित्व-शीलगुणों, दृष्टियों एवं मूल्यों का निर्धारण होता है।

माता-पिता की मनोवृत्ति:-

बच्चों के प्रति माता-पिता की अनुकूल या प्रतिकूल मनोवृत्ति का प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है। जो माता-पिता स्वयं अभिचोजित होते हैं और अपने बच्चों के प्रति स्नेह एवं आदर का भाव रखते हैं, उनके बच्चों में आत्मविश्वास, आशावाद, आत्म सम्मान आदि शीलगुणों का विकास होता है।

अनुकरण :-

बच्चे अनुकरण द्वारा सामान्य मनोवृत्तियों तथा विशिष्ट प्रतिक्रियाओं को अर्जित कर लेते हैं।

(ii) द्वितीयक समूह (secondary group) :-

द्वितीयक समूह का तात्पर्य ऐसे समूह से है, जिसके सदस्यों के बीच प्राथमिक तथा निकट संबंधों का सम्बन्ध नहीं होता है, परन्तु वे सामान्य लक्ष्य या उद्देश्य को प्राप्त की ओर सक्रिय होते हैं। इसलिए ऐसे समूह के मानदण्डों, मूल्यों तथा रीति रिवाजों का प्रभाव उनके व्यक्तित्व विकास पर स्वाभाविक रूप से पड़ता है।

(iii) संदर्भ समूह (Reference group)

संदर्भ समूह ऐसे समूह को कहते हैं जिसका सदस्य फिलहाल व्यक्ति यदि नहीं हो, परन्तु सदस्य बनने की इच्छा रखता हो। ऐसे समूह के साथ व्यक्ति आत्मीकरण स्थापित कर लेता है तथा उसके मानदण्डों तथा एवं मूल्यों

Scanned with CamScanner

को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है।

(2) खेल (Games)

खेल के मैदान में विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्थितियों के बच्चे जमा होते हैं। उनके बीच होने वाली परस्परक्रिया का प्रभाव उनके व्यक्तित्व निर्माण पर पड़ता है।

(3) पड़ोस (Neighbourhood):-

बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर पड़ोस का गहरा प्रभाव पड़ता है।

(4) शिक्षालय (School)

बच्चों के सामाजीकरण का एक प्रभावशाली एजेन्ट शिक्षालय है जो वस्तुतः एक द्वितीयक समूह है। शिक्षालय के भौतिक वातावरण, अनुशासन, शिक्षक के चरित्र, शिक्षार्थी के चरित्र आदि का प्रभाव व्यक्तित्व के निर्माण पर पड़ता है।

(5) सामाजिक-आर्थिक कारक (socio-economic Factors)

व्यक्तित्व विकास पर सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों का प्रभाव पड़ता है।

(6) संस्कृति और व्यक्तित्व (culture & Personality)

अध्ययनों एवं निदानों से पता चलता है कि व्यक्तित्व के विकास तथा शीलगुणों के निर्माण पर संस्कृति का गहरा प्रभाव पड़ता है। ब्रोएनफेल्ड के अनुसार बच्चा एक कच्ची सामग्री है जिसको संस्कृति अपने अनुकूल पक्का माल के रूप में ढाल लेती है। संस्कृति इस काम को विशेष प्रशिक्षण द्वारा करती है।

Scanned with CamScanner

व्यक्तित्व की माप (Measurement of Personality)

मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व मापन की विधियों को निम्नलिखित तीन भागों में बाँटा है:—

(i) व्यक्तित्व आविष्कारिका (Personality inventories)
(ii) प्रक्षेपण विधियाँ (Projective methods)
(iii) प्रेक्षण विधियाँ (observation methods) < Rating scale / Interview

(1) व्यक्तित्व आविष्कारिका (Personality inventories)

व्यक्तित्व मापने की यह विधि काफी प्रचलित विधि है। इस विधि में व्यक्ति के खास-खास शीलगुणों से सम्बन्धित कुछ प्रश्न बने होते हैं जिनका उत्तर हाँ या नहीं में या सही-गलत में देना होता है। कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तित्व आविष्कारिका निम्नलिखित हैं:—

(a) माइनेसोटा मल्टीफेजिक पर्सनालिटी टेस्ट या एम.एम.पी.आई-2 (Minnesota mutiphasic Personality Test or MMPI-2)

इस परीक्षण का निर्माण पहले-पहल हाथावे तथा मैकिनले ने 1940 में किया। इस परीक्षण के मौलिक प्रारूप में 550 एकांश (item) हैं और प्रत्येक एकांश के तीन उत्तर हैं — 'True', 'False', 'cannot say'

अभी हाल में MMPI का एक विकसित प्रारूप बुचर, डालस्ट्रोम, ग्राहम, टेलेगेन तथा कैमर 1989 द्वारा तैयार किया गया है जिसमें 567 एकांश हैं। इसमें कुल 13 विभिन्न मापनी हैं जिसमें 9 नैदानिक मापनी हैं जिनके द्वारा विशेष मनोवैज्ञानिक समस्याओं जैसे मनोविदालिता, विषाद, स्थिर व्यामोह आदि का मापन होता है।

(b) बेल समायोजन आविष्कारिका (Bell Adjustment Inventory)

इस आविष्कारिका का निर्माण बेल (Bell) ने 1934 में किया। इस आविष्कारिका का उद्देश्य व्यक्ति में समायोजन संबंधी कठिनाईयों का पता लगाना है। इस आविष्कारिका में दो फॉर्म होते हैं। विद्यार्थी फॉर्म तथा व्यावसायिक फॉर्म। विद्यार्थी फॉर्म में कुल 140 एकांश होते हैं जो चार भिन्न-भिन्न होते जैसे:- गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक तथा संवेगिक अवस्था से संबंधित समायोजन समस्याओं का पता लगाना होता है।

Scanned with CamScanner

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 'हाँ', 'नहीं' एवं '?' में से किसी एक में गोल घेरा खींचकर दिया जाता है। व्यावसायिक कॉर्म में कुल 140 एकांशों में 20 एकांश और जोड़ दिया जाता है। इस परीक्षण की विश्वसनीयता गुणांक .75 से .89 तक है तथा वैधता गुणांक .58 से .89 तक पाया गया।

(iii) कैटेल 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (Cattell's 16 P.F Questionnaire)

इस परीक्षण का निर्माण कैटेल ने किया। इस प्रश्नावली में कई फार्म हैं जिनके द्वारा 16 वर्ष से अधिक आयुवाले व्यक्तियों के 16 शीलगुणों को मापा जाता है।

[2] प्रक्षेपण विधियाँ (Projective methods) :-

प्रक्षेपण विधि द्वारा व्यक्तित्व की माप परोक्ष रूप से होती है। इस परीक्षण में व्यक्ति के सामने कुछ अस्पष्ट तथा अलंगठित उद्दीपन या परिस्थिति दिया जाता है। ऐसे उद्दीपनों या परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति कुछ अनुक्रिया करता है। इन अनुक्रियाओं के सहारे व्यक्ति अचेतन रूप से अपनी इच्छाओं, त्रुटियों एवं मानसिक संघर्षों को प्रक्षेपित करता है।

व्यक्तित्व मापन के लिए मनोवैज्ञानिकों ने कई तरह के प्रक्षेपण परीक्षण का वर्णन किया है जो निम्नलिखित हैं :—

(i) शब्द साहचर्य परीक्षण (Word Association Test)
(ii) रोर्शाख परीक्षण (Rorschach Test)
(iii) विषय आत्मबोधन परीक्षण (Thematic Apperception Test)
(iv) वाक्य पूर्ति परीक्षण (Sentence Completion Test)

(i) शब्द साहचर्य परीक्षण (Word Association Test)

इस परीक्षण में कुछ पूर्व निश्चित उद्दीपन शब्दों को एक-एक करके बोल-बोलकर व्यक्ति के सामने उपस्थित किया जाता है। व्यक्ति को शब्द सुनने के बाद उसके मन में जो सबसे पहला शब्द आता है उसे बताना होता है। व्यक्तित्व मापन के रूप में इस परीक्षण का उपयोग फ्रायड तथा उनके शिष्यों विशेषकर युंग द्वारा प्रारंभ किया गया।

Scanned with CamScanner

(ii) रोर्शाख परीक्षण (Rorschach Test):-

इस परीक्षण का प्रतिपादन हरमान रोर्शाख ने 1921 में किया। इस परीक्षण में 10 कार्ड होते हैं जिन पर स्याही के धब्बे के समान चित्र बने होते हैं। इनमें 5 कार्ड पर स्याही के धब्बे पूर्णतः काला-उजला रंग के होते हैं और 5 कार्ड पर स्याही के धब्बे जैसा आकृति रंगों में होते हैं। प्रत्येक कार्ड एक-एक करके, उस व्यक्ति को दिया जाता है जिसका व्यक्तित्व मापना होता है। कार्ड को वह जैसे चाहे घुमा-फिरा सकता है और ऐसा करके उसे बताना होता है उसे उस कार्ड में क्या दिखाई दे रहा है मेरा धब्बा का कोई अंश या पूरा भाग उसे किस चीज के समान दिखाई पड़ रहा है। व्यक्ति द्वारा दिए गए अनुक्रिया को लिख लिया जाता है और बाद में उनका विश्लेषण कुछ खास-खास आधार सूत्रों के सहारे निम्नांकित चार भागों में बाँटकर किया जाता है - स्थान विन्यास, निर्धारक, विषय वस्तु, मौखिक अनुक्रिया एवं संगठन

(iii) विषय आत्मबोधन परीक्षण (Thematic Apperception Test या TAT)

इस परीक्षण का निर्माण Murray ने 1935 में किया। इस परीक्षण में कुल 31 कार्ड होते हैं जिनमें 30 कार्ड पर चित्र बने होते हैं तथा 1 कार्ड खादा होता है। जिस व्यक्ति के व्यक्तित्व को मापना होता है, उसके लिंग एवं उम्र के अनुसार 31 कार्ड में से 20 कार्ड का चयन कर लिया जाता है। इन 20 कार्डों में 19 कार्ड पर चित्र अंकित होते हैं और एक कार्ड खादा होता है। किसी एक व्यक्ति पर अधिकतम 20 कार्ड का ही क्रियान्वयन किया जाता है। प्रत्येक कार्ड के चित्र के आधार पर व्यक्तित्व का मापन किया जाता है। Murray के अनुसार इस परीक्षण का विश्लेषण निम्नलिखित प्रसंगों में किया जाता है जैसे:- नायक, आवश्यकता, वेग, पीड़ा, परिणाम

(iv) वाक्यपूर्ति परीक्षण (Sentence Completion Test)

इस परीक्षण में कुछ अधूरे वाक्य होते हैं जिन्हें उस व्यक्ति को दे दिया जाता है जिसका व्यक्तित्व मापन होता है। प्रत्येक व्यक्ति अधूरे वाक्य को अपने अनुभवों के आधार पर पूरा करता है।

प्रेक्षण विधियाँ (Observational method)

प्रेक्षण विधि वह विधि है जहाँ एक प्रेक्षक व्यक्तियों या बातों की क्रियाओं का ध्यानपूर्वक प्रेक्षण एक नियंत्रित परिस्थिति या एक वास्तविक परिस्थिति में करता है तथा फिर उनकी क्रियाओं का लेखा जोखा का विश्लेषण कर उनके व्यक्तित्व के बारे में एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचता है।

8.3 अभ्यास के प्रश्न Questions for Exercise

Q1. Describe the determinants of personality.
व्यक्तित्व के निर्धारकों का वर्णन कीजिए।

Q2) Describe the different methods of measurement of personality.
व्यक्तित्व मापन की विभिन्न विधियों का वर्णन कीजिए।

Scanned with CamScanner